

①

Prof. Pankaj Kr. Gupta  
Assistant Professor (Eco.)  
R.B.G.R. College, Mahabubnagar

TDI-II Eco (Hons.)  
Paper-III Monetary Eco.  
Group-B Module-4  
Basic Concept of Money.

### Topic - Gresham's Law

#### ग्रेशम का नियम

ग्रेशम का नियम इंग्लैंड के अर्थशास्त्री सर थॉमस ग्रेशम के नाम से संबंधित है। ग्रेशम महारानी एलिजाबेथ के आर्थिक सलाहकार थे। एलिजाबेथ के पूर्व इंग्लैंड में भासकों ने निकुष्ट सिक्के चालू किये थे और वे ही चलन में थे। परन्तु एलिजाबेथ ने देश की मुद्रा में सुधार करने करने के विचार से नये पूर्णकाय सिक्के चालू किये। उनका विचार था कि पीरे-धीरे लोग पुराने सिक्कों का बहिष्कार कर देंगे और नये सिक्के चलन में आ जायेंगे। परन्तु प्रयास आशा के विपरीत रहा। देखने में आया कि पुराने तथा निकुष्ट सिक्के तो चालू रहे और नये सिक्के चलन से बाहर हो गये।

(2)

महारानी ने इसका कारण जानने के लिए  
गैशम को नियुक्त किया। गैशम ने  
इसका स्पष्टीकरण किया, जिसको उन्हीं  
के नाम पर गैशम का नियम कहते हैं।  
गैशम के शब्दों में, "खराब सिक्कों  
में अच्छे सिक्कों को चलन से निकाल  
देने की प्रवृत्ति होती है।"  
गैशम का मत था कि मनुष्य का प्राकृतिक  
स्वभाव है कि वह अच्छी वस्तुओं का  
संग्रह करता है और खराब वस्तुओं को  
अपने से दूर रखने का प्रयास करता है।  
अतः खराब सिक्के संग्रह नहीं किये जा  
सके और इस कारण वे चलन में बने रहे।  
खराब मुद्रा से तात्पर्य - खराब मुद्रा का अर्थ  
जाली अथवा खोटे सिक्कों से नहीं होता  
है, वरन् उस मुद्रा से है जो अपने जैसी  
मुद्राओं की अपेक्षा तेल में कम हो, रंग  
या आकृति में बुरी हो, मैली अथवा घिसी  
हुई हो। जिसका धातु मूल्य कम हो। पत्र मुद्रा  
के सम्बन्ध में खराब मुद्रा से आशय उन  
नौरो से होता है जो परिपक्व नहीं हैं  
तथा फटे पुराने हैं।

③

अच्छी मुद्रा के चलन में न रहने का कारण -

- (1) मुद्रा संग्रह की प्रवृत्ति ।
- (2) सिक्कों को गलाना ।
- (3) विदेशी मुद्रा

End